RNI No - RAJHIN/2003/9899 Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2018-2020
Published on 01 October 2018 Posted at RMS, Sri Ganganagar on 2nd or 3rd October 2018

मासिक पत्रिका

अजायब ✲ बानी

वर्ष : सोलहवां | अंक : छठा | अक्टूबर–2018

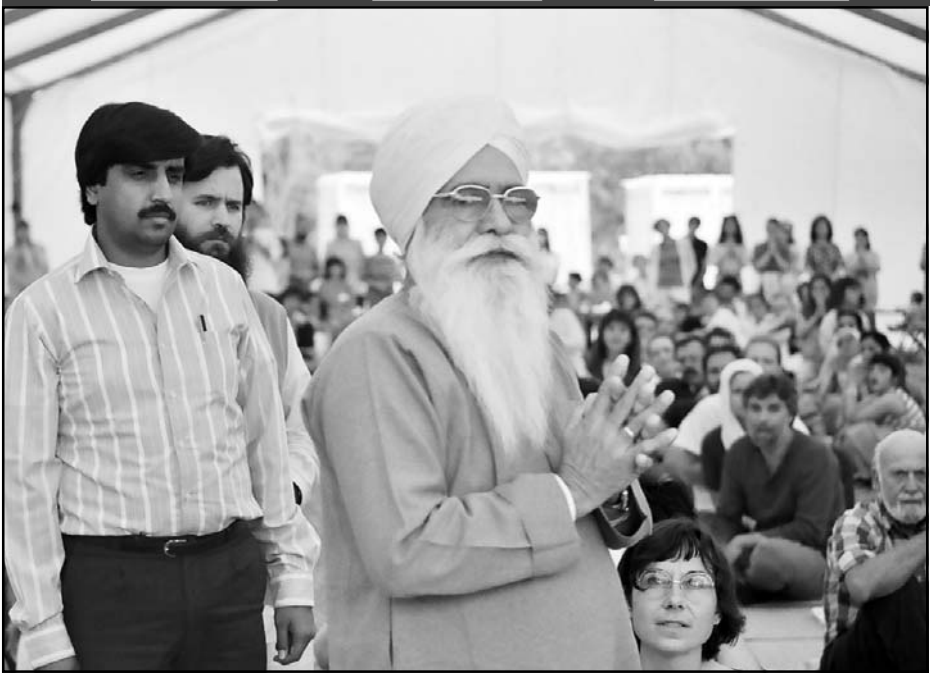

5 खानाबदोशों की बस्ती
27 भजन-अभ्यास
31 लालच
34 धन्य अजायब

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे, नारायणा,
नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039
जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। 99 50 55 66 71 मूल्य ₹ 5/-
e-mail : dhanajaibs@gmail.com 199 Website : www.ajaibbani.org

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की अपार दया से AJAIBANI अजायब बानी नाम की एक एप्लीकेशन बनाई गई है। आप इस एप्लीकेशन को प्लेस्टोर में जाकर अपने एंड्राएड फोन पर डाउनलोड कर सकते हैं।

इस एप्लीकेशन AJAIBANI की बाईं तरफ ऊपरी कोने में मेन्यू बटन का इस्तेमाल करके आप बाबा जी के आडियो-वीडियो सतसंग, सवाल-जवाब को प्ले करके देख व सुन सकते हैं और डाउनलोड भी कर सकते हैं। इस एप्लीकेशन में अजायब बानी हिन्दी और मराठी की मासिक पत्रिका व अन्य प्रकाशित पुस्तकें ***खुशियों का खजाना***, ***परमात्मा के रंग***, ***प्यार का सागर***, ***अमृतवेला***, ***भजन माला-2010*** और बाबा जी की फोटोज भी हैं।

आशा करते हैं कि आप सतगुरु की मधुर याद में बनाई गई इस एप्लीकेशन को डाउनलोड करके लाभ उठाएंगे।

***

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

खानाबदोशों की बस्ती

सहजो बाई जी की बानी DVD-214 मुम्बई

गुरुदेव के चरणों में और सब सन्तों के चरणों में नमस्कार है। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

गुरुदेव माता गुरुदेव पिता गुरुदेव स्वामी परमेश्वरा।

गुरुदेव ही माता है, गुरुदेव ही पिता है और गुरुदेव ही परमात्मा है। सन्त-महात्मा मालिक के प्यारे अपनी मर्जी से संसार में नहीं आते उन्हें भेजा जाता है। वे न अपनी मर्जी से सतसंग का कार्यक्रम चलाते हैं न जीवों को नामदान ही देते हैं; वे जो कुछ करते हैं उस गुरुदेव परमात्मा के हुक्म में ही करते हैं।

जिन रूहों का दरगाह में धुरकर्म बन जाता है सन्तों पर उनके लिए जिम्मेवारी आती है कि वे उन्हें 'शब्द-नाम' के साथ जोड़ें, उन आत्माओं को सच्चखंड पहुँचाने में मदद करें। महात्मा संसार में न कोई नई समाज बनाने के लिए आते हैं न कोई बनी हुई समाज तोड़ने के लिए आते हैं। गुरु गोबिंद सिंह जी ने कहा है:

चित्त न भयो हमरो आवन कह, चुभि रही सुरति प्रभु चरणन मेंह।

मेरा चित्त प्रभु के चरणों में से आने के लिए नहीं कर रहा था लेकिन परमात्मा ने जो हुक्म दिया मैं उसे टाल नहीं सका, परमात्मा ने मुझे यह दिलासा दिया:

मैं अपना सुत तुझे नवाजा।

मैं तुझे अपना बेटा समझता हूँ, तूने मेरा दिया हुआ कार्यक्रम करना है। मैं जिन आत्माओं का दरगाह में फैसला कर दूंगा जिनका धुरकर्म बनाया होगा वही आत्माएं तेरे पास आएंगी। समय-समय

पर मालिक के प्यारे महात्मा परमात्मा के भेजे हुए संसार में आते हैं। वे अपनी मर्जी नहीं करते, उन्हें परमात्मा गुरुदेव जो हुक्म देता है वे वही करते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

दीनदयाल भरोसे तेरे सब परिवार चढ़ायो बेड़े।
जे तिस भावे ते हुक्म मनावे इस बेड़े को पार लघांवे।।

सन्त जीवों को नाम के जहाज में बिठाकर उस आवाज और प्रकाश के साथ जोड़कर कहते हैं, ''परमात्मा! तूने हमें जो काम सौंपा था, हमने तेरे भरोसे इन्हें नाम के जहाज में बिठा दिया है अब तेरी मौज है तू इनसे कमाई करवा।''

मैं रोज आपके आगे सहजो बाई की बानी का सतसंग कर रहा हूँ। सहजो बाई ने सतसंग और नाम पर बहुत जोर दिया है, पल-पल सतगुरु की महिमा गाई है। आप बहुत प्यार से सतसंग की महिमा गाते हुए कहती हैं:

साध संग है चानणा जगत अंधेरे माहे।

सारी दुनिया अंधेरे में ठोकरे खाती फिर रही है किसी को यह नहीं पता कि परमात्मा ने हमें इतना कीमती तोहफा इंसानी जामा किसलिए दिया है, हमें इससे क्या फायदा उठाना चाहिए? जब हम भूले-भटके जीव परमात्मा की प्रेरणा से किसी पूर्ण महात्मा की संगत में जाते हैं तब महात्मा हमारे ऊपर तरस खाकर बहुत प्यार से हमें हमारे वतन सच्चखंड की जानकारी देते हैं।

महात्मा बताते हैं कि हम **खानाबदोशों की बस्ती** में आए हैं, हम खानाबदोश ही बने फिर रहे हैं। खानाबदोश उन्हें कहते हैं

सारी दुनिया अंधेरे में ठोकरे खाती फिर रही है किसी को यह नहीं पता कि परमात्मा ने हमें इतना कीमती तोहफा इंसानी जामा किसलिए दिया है, हमें इससे क्या फायदा उठाना चाहिए?

जिनकी झोपड़ी आज यहाँ है कल पता नहीं कहाँ होगी? उनकी अपनी जगह नहीं होती उस जगह का मालिक या सरकार जब चाहे उन्हें वहाँ से हटा सकते हैं। हम भी **खानाबदोशों की बस्ती** में आए हैं न यहाँ हमारा कोई घर है न बेटे-बेटियां हैं न हाट-हवेली है।

सहजो बाई हमें समझा रही हैं कि सतगुरु ने हमें नाम देकर नाम के साथ जोड़ा है लेकिन नाम के साथ हमारा प्यार नहीं, इस तरफ हमारा ध्यान नहीं जाता। जिस परमात्मा ने यह दुनिया पैदा की है यह आत्मा उसकी अंश है। परमात्मा आत्मा पर तरस करे तो सब कुछ होता है। जब परमात्मा तरस करता है तो वह खुद ही इंसानों में इंसान बनकर आ जाता है, आज तक ऐसा ही होता आया है। हर महात्मा ने जीवित महापुरुष के मिलाप पर जोर दिया है।

महाराज जी कहा करते थे कि वक्त की तीन-चार चीजें काम आती हैं अगर हम बीमार हैं तो वक्त का डॉक्टर ही दवाई देकर हमारे शरीर को आराम दे सकता है। लुकमान, धुनंत्तर बड़े अच्छे वैद्य हुए हैं लेकिन मौत की दवाई उनके पास भी नहीं थी। वह अपने समय में दुनिया को फायदा पहुँचाते रहे हैं अगर आज हम बीमार हैं तो हम चाहे उनके लिए कितनी भी श्रद्धा बना लें उनकी फोटो के आगे धूप दे लें कि वह हमारा ईलाज करेंगे ऐसा नहीं हो सकता। हमें वक्त के डॉक्टर-वैद्य के पास ही जाना पड़ेगा।

इसी तरह स्कूल के टीचर को अगर स्कूल छोड़े हुए पचास-साठ साल हो गए हों और हम चाहें कि हमने अपना बच्चा उस टीचर से पढ़वाना है वह बहुत काबिल था। अब उसने आकर हमारे बच्चे को नहीं पढ़ाना हमें वक्त के टीचर के पास ही जाना पड़ेगा।

इसी तरह राजा अकबर अच्छा न्यायकारी था। आज हम चाहें कि हमारे मुकदमें का फैसला वही करे तो ऐसा नहीं हो सकता।

आज हमारे मुल्क के मालिकों ने जो मेजिस्ट्रेट बनाए हैं हमें अपना न्याय करवाने के लिए उनके पास ही जाना पड़ेगा। इसी तरह अगर कोई लड़की यह कहे कि राजा विक्रमादित्य बहुत धर्मात्मा था मैंने उसके साथ ही शादी करवानी है, अब उसने आकर बच्चा पैदा नहीं करना वक्त के पति की जरूरत है।

अगर आज हम इन चीजों को सच महसूस करते हैं तो पहले जो महात्मा हुए हैं हम उनकी बहुत इज्जत करते हैं। उन महात्माओं ंने बहुत मेहनत की पिंड को छोड़कर ब्रह्मांड पर चढ़े मालिक के साथ मिलाप किया और हमें रास्ता दिखाया। उन्होंने अंदर जो नजारे देखे और उन्हें जो रूकावटें पेश आई जिनकी मदद से रूकावटों को दूर किया उन्हें सन्त-सतगुरु सतपुरुष कहा है।

जब हम उन महात्माओं की बानियां पढ़ते हैं, सोचकर पढ़ें तो समझ आती है तब हमारे अंदर तड़प पैदा होती है फिर हम जीवित महापुरुष की जरूरत महसूस करते हैं। अगर हम तोते की तरह उन्हें रटते जाएं, उनकी तस्वीरों के आगे धूप देते जाएं या माथे टेकते जाएं तो उन्होंने आकर हमें शब्द-नाम का भेद नहीं देना। अगर उन्होंने इस संसार में भूतों की तरह ही चक्कर लगाने थे तो उन्हें भक्ति करने की भूख-प्यास काटने की क्या जरूरत थी? परमात्मा खुद ही इंसान बनकर आता है लेकिन हम उनके संदेश को सुनने के लिए तैयार नहीं होते तो मानने के लिए क्या तैयार होंगे?

गुरु गोबिंद सिंह जी का घर-घाट लूट लिया, उनके बच्चों को बनती दीवार में चिन दिया गया। उनकी माता को ठंडे बुर्ज में रखकर शहीद किया गया। उनके पिता गुरु तेग बहादुर साहब को उस वक्त के बादशाह ने दिल्ली में शहीद किया। उन मालिक के प्यारों का क्या कसूर था, उन्होंने क्या गुनाह किया था?

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जैसे भेड़ों के बाड़े को आग लग जाती है लोग तरस खाकर उन्हें बाहर निकालते हैं कि ये बच जाएं लेकिन वे सोसाईटी की बंधी हुई उसी तरफ जाकर राख हो जाती हैं। हम लोग समाजों में जकड़े हुए हैं किसी की बात सुनने के लिए तैयार नहीं होते मानना तो क्या है?''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि अंग्रेजों के राज्य में भी आज की तरह सन्तों को बोलने की छूट थी नहीं तो हम भी पहले के सन्त-महात्माओं की तरह परखे जाते। परमात्मा जब अपने प्यारों को संसार में भेजता है तो हम उनकी बात सुनने के लिए तैयार नहीं होते। वे मालिक के प्यारे बहरूपिया बनकर हमारे बीच रहना शुरू कर देते हैं, वे हमारे जैसा कारोबार करते हैं हमारे जैसे कपड़े पहनते और बोलते-चलते हैं।

हमें पता है कि संगत का बहुत रंग चढ़ता है अगर हम जुआ खेलने वालों की संगत में जाते हैं तो जुआ खेलने की आदत पड़ जाती है। शराबियों-कबाबियों की संगत में जाते हैं तो शराब पीने की आदत पड़ जाती है। अगर हम नाम के रसिए साधु सन्त महात्माओं की सोहबत में जाते हैं तो हमारे ऊपर नाम का रंग चढ़ना शुरू हो जाता है; हम बुरी आदतों को एक-एक करके छोड़ देते हैं और अच्छी आदतों को अपनाना शुरू कर देते हैं।

जो बहरूपिया बनकर हमारे बीच रहता है वह धीरे-धीरे हमें प्यार की बातें सुनाना शुरू कर देता है कि तेरा घर बहुत अच्छा है, मैं वहाँ से आया हूँ। एक दिन उन बच्चों के ऊपर भी रंग चढ़ जाता है वे उसके साथ जाने के लिए तैयार हो जाते हैं, वह उन्हें उनके घर का रास्ता बता देता है।

बेशक आज हमने अलग-अलग रास्ते अपना लिए हैं लेकिन सन्त-महात्मा किसी भी युग में आए, सभी सन्त यही कहते हैं कि परमात्मा एक है और उससे मिलने का रास्ता भी एक है। वह रास्ता सबके अंदर है, परमात्मा सबके शरीर के अंदर है अगर कोई सच्चे से सच्चा मंदिर, ठाकुर द्वारा, गुरुद्वारा, मस्जिद, चर्च है तो वह आपका शरीर है। गुरु अमरदेव जी महाराज कहते हैंः

हर मंदिर ऐहो शरीर है ज्ञान रतन प्रकट होय।

मैं जिस मंदिर में जाने के लिए आपको रोज कहता हूँ वह मंदिर आपका शरीर है। यह शरीर परमात्मा ने बनाया है और रास्ता भी उसने खुद ही बनाया है। परमात्मा हमारी संभाल के लिए महात्मा को संसार में भेजता है, जब तक हुक्म होता है तब तक महात्मा हमारे बीच रहते हैं।

आप ठंडे दिल से सोचकर देखें! अगर किसी बादशाह को गंदी जगह भेजा जाए तो वह वहाँ जाने के लिए कैसे तैयार होगा? लेकिन कई बार उसे अपने से ऊपर वालों का हुक्म भी मानना पड़ जाता है। सन्त जिस देश के रहने वाले होते हैं, वह शान्ति का देश है किसी का वहाँ से आने को दिल नहीं करता।

गुरु गोबिंद सिंह जी ने उस देश के बारे में बहुत प्यार से बताया था कि जिसका उस प्यारे परमात्मा से मिलाप हो जाए वह बिछोड़े को गले क्यों लगाएगा? जिसको सचखंड की सैर करने को मिले वह कल्लर में रेत क्यों उड़ाऐगा? जिसकी आत्मा को रोज अमृत की खुराक मिलती हो वह दुनिया के विषय-विकारों की जहर को चखने के लिए क्यों तैयार होगा? फिर भी वह उस परमात्मा के हुक्म को नहीं मोड़ता सिर मत्थे मानता है, चाहे उसे संदेश देने में कितनी भी कठिनाई क्यों न आए!

महात्मा ने संसार में आकर परमात्मा का संदेश दिया तभी कठिनाईयां झेली। शर्मद ने इस संसार का कपड़ा तक नहीं पहना फिर भी उसे भरे बाजार में कत्ल किया गया। शर्मद से कहा गया कि आप बादशाह का फरमान मान लें। शर्मद ने हँसकर कहा, ''यह तो एक दुनियावी बादशाह है सच्चा शहन्शाह तो वह परमात्मा है।'' जो फकीर ज्यादा मस्ती में आ जाते हैं वे अपने आपको सुल्तान भी कहने लग जाते हैं लेकिन जिन्हें मजहबी कट्टरपने की जहर चढ़ी होती है उनसे यह बर्दाशत नहीं होता।

जब क्राईस्ट को फत्वा दिया गया कि तू कुफ्र बोलता है अपने आपको खुदा का बेटा कहता है। अगर कोई अपने आपको परमात्मा का बेटा कहता है तो इसमें क्या जुल्म है? अगर महात्मा यह कह देते हैं कि परमात्मा हमारा पिता है तो उन्होंने क्या जुल्म कर दिया? एक दिन हमारे अंदर अपने वतन की याद जाग पड़ती है। पहले तो हम यकीन नहीं करते जब उसकी मीठी प्यारी बातें सुनते हैं तो हम भी उस महात्मा के साथ जाने के लिए तैयार हो जाते हैं। महात्मा यह भी नहीं कहते कि आप अकेले जाएं उन्हें पता है कि ये अकेले भटक जाएंगे इसलिए वह साथ होते हैं।

मैं बताया करता हूँ कि गुरु न देह को शिष्य बनाता है और न ही अपनी देह को शिष्य का गुरु बनाता है। आत्मा को सेवक और शब्द को गुरु बनाकर शब्द के साथ जोड़ता है। जब गुरु नानकदेव जी से पूछा गया कि आपका गुरु कौन है तो आपने कहाः

शब्द गुरु सुरत धुन चेला।

मेरी आत्मा जो धुन है वह सेविका है और शब्द मेरा गुरु है। कोई भी महात्मा शिष्य को अपने साथ नहीं जोड़ता, महात्मा शब्द में से आते हैं और शब्द के साथ ही जोड़ते हैं, शब्द ही उनका

स्वरूप है। उसी स्वरूप को सारे महात्माओं ने सोहणा और मन-मोहणा कहा है। जो सिमरन के जरिए अपने ख्याल को आँखों के पीछे लाकर सूरज, चन्द्रमा, सितारे पार करके गुरु स्वरूप को प्रकट कर लेते हैं उस स्वरूप के दर्शन कर लेते हैं वे सच्चे शिष्य बन जाते हैं। उस मनमोहनी मूरत को कोई छोड़ नहीं सका और न छोड़ ही सकता है। स्वामी जी महाराज ने भी कहा हैः

मेरे गुरु का कोई स्वरूप देखे हो जाए हूर परंदरी।

लोग कहते हैं कि स्वर्गों में हूरें बहुत अच्छी हैं लेकिन देखी नहीं होती। स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''कोई भी हूर सन्तों की मन मोहनी मूरत का मुकाबला नहीं कर सकती क्योंकि हूरें जन्म और मरण में लगी हुई हैं, वे विषय-विकारों की कैदी हैं। आखिर उन्हें भी एक दिन इस दुनिया में आकर जन्म लेना पड़ता है।''

जब गुरु अर्जुनदेव जी से अंदर के स्वरूप के बारे में पूछा गया कि आप जिसे सोहनी मन मोहनी मूरत कहते हैं वह कैसी है? तब गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''जब वह मूरत आँखों से ओझल हो जाती है तो मैं पागलों की तरह हो जाता हूँ; जब देखता हूँ तो खुशी होती है। उस दिलबर की मन मोहनी मूरत देखे बगैर तन मुर्दा लगता है।'' महात्मा कहते हैंः

झाकी दिलबर वाली बाजो तन नू जाणें मुर्दा।

सहजो बाई कहती हैं कि हम **खानाबदोशों की बस्ती** में फिरते हैं। वह परमात्मा हमारे साथ खानाबदोशो की तरह ही रहने लग जाता है अपने वतन की मीठी-मीठी बातें याद करवाता है। संसार में बड़े- बड़े हो गुजरे आखिर कोई नहीं रहा। हर जीव कर्मों का भुगतान करता है। कभी पशु तो कभी पक्षी बनता है फिर जहाँ आशा होती है वहाँ जाकर जन्म लेना पड़ता है।

जहाँ आसा तहाँ वासा।

मुलजिम भी इंसान है और शरीफ भी इंसान है लेकिन मुलजिम कचहरी में फिरता है। मुलजिम को हथकड़ी लगी होती है जिसकी नित्य पेशी हो उसकी क्या इज्जत है? जो जन्मता-मरता है जिसे धर्मराज के दूत पकड़कर ले जाते हैं उसकी कितनी इज्जत है? जिन महात्माओं की आँखें खुली हैं वे बहुत प्यार से कहते हैंः

कई जन्म भए कीट पतंगा कई जन्म गज मीन कुरंगा।
कई जन्म पंखी सर्प होयो कई जन्म है भी बिरख जोयो।
मिल जगदीश मिलन की बरिया चिरनकाल ऐह देह सजरिया।।

पता नहीं हमने कितने जामें धारण किए हैं। गौर से सुनेः

उपज उपज फिर फिर मरौ, यम दे दारुण दुख।
लाज नहीं सहजो कहै, धृग तुम्हारो मुख।।

सहजोबाई कहती हैं, ''जीव जन्मता है मरता है। धर्मराज अपने यमदूतों को भेजता है, वे मार-पीटकर बेईज्जत करके ले जाते हैं। लानत है तुझे फिर भी लाज नहीं आई कि मैं किन-किन योनियों में फिरता रहा हूँ।''

पशु पक्षी नर सुर असुर, जल चर कीट पतंग।

कभी पशु बना कभी पक्षी बना कभी जल का जीव बना कभी कीड़ा बनकर धरती पर रेंगना पड़ा। यह उन महात्माओं का कहना है जिनकी आँखे खुली हुई हैं, वे हमें डराते नहीं सिर्फ सच्चाई बयान करते हैं।

सबही उत्पति कर्म की, सहजो नाना अंग।

परमात्मा की किसी से दुश्मनी नहीं। जिसने जैसा कर्म किया उसे वैसा ही शरीर दे दिया, शरीर भी कर्मों के मुताबिक मिलता है।

आप देखें! पशु-पक्षी लूले-लंगड़े और अंधे भी होते हैं उन्हें भी बीमारी लगती है लेकिन उन बेचारों की कोई दवाई नहीं कर सकता, उनका पेट नहीं पाल सकता वे भूख से तड़पकर मर जाते हैं।

कर्मनिके प्रेरे फिरौ, जन्म जन्म दुख होय।
मुक्ति विचारो सहजिया, आवागमन जा खोय।।

सारे ही जन्म-मरण में सुख-दुख भोगने में लगे हुए हैं। जब परमात्मा मेहर करके इंसान का जामा देता है तो हमें इसमें से निकलने का उपाय करना चाहिए। महात्मा के पास जाने से पता लगता है कि इंसानी जामा सीढ़ी का आखिरी स्टेप है अगर कोशिश करके कदम उठा लेते हैं तो मकान की छत पर चढ़ जाते हैं अगर पैर फिसल जाता है तो हम जमीन पर आ जाते हैं। अगर इंसान के जामें में बैठकर शब्द-नाम की कमाई नहीं की तो हम कीड़े, पतंगों की निचली योनियों में चले जाते हैं। यहाँ से कर्म भोगने के लिए हमें नर्कों में भी जाना पड़ता है।

सहजो मन रहै वासना, जैसी पावै ठौर।
जहां आश जहां वास है, निश्चय करी करोर।।

मैं बताया करता हूँ कि आज तक किसी की सारी आशाएं न पूरी हुई हैं न हो ही सकती है। किसी की दस आशाएं पूरी हो जाती हैं और दस अधूरी रह जाती हैं। मरने के समय जो आशाएं अधूरी रह जाती हैं बार-बार उनका ख्याल आता है, संकल्प-विकल्प उठने शुरू हो जाते हैं। आखिर में जहाँ हमारा ख्याल होता है आगे हमें वही योनि मिलती है। भक्त त्रिलोचन कहते हैंः

अंत समय जे मंदर सिमरे ऐसी चिंता में जे मरे प्रेत जोनि बल बल उतरे।।

मैं यह बात करना तो नहीं चाहता था लेकिन शब्द की कड़ी ऐसी है कि बात करनी पड़ती है। यहाँ आने से तीन-चार दिन पहले अमेरिका से एक हिन्दुस्तानी वीर का पत्र आया। उसका एक दोस्त यहाँ सतसंग में भी बैठा है। उसने अपने पत्र में लिखा कि उसे भूत चिपटा हुआ है वह भूत उसे आठ दिन के बाद तंग करता है उस समय मेरी जान पर बन आती है फिर उसने जानकारी दी कि वह भूत हमारी रिश्तेदारी में से है, दिल्ली के आजाद नगर का रहने वाला था, वह डेरे वड़भागसिंह का मसंद था। उसे जिस बंदे ने मेरे बारे में बताया उसका नाम भी लिखा है। अब आप सोचकर देखें! वे लोग कहते हैं कि हम भूतों की गति कर देते हैं लेकिन जो किसी का खाएगा वह भूत ही बनेगा, भूत बनकर न वह खुद सुखी होता है न किसी और को सुखी रहने देता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

प्रेत पिंजर में कष्ट घनेरे।

पत्र में तो बहुत कुछ लिखा था। पत्र पढ़कर हँसी भी आई और समझ भी आई कि देखो! बंदा सात समुंद्र पार चला गया वहाँ भी प्रेत उसे दुख देने के लिए गया। मैंने प्यार से पत्र का जवाब दिया कि हो सकता है पत्र लिखने के बाद प्रेत ने तेरा पीछा छोड़ दिया हो नहीं तो मेरा पत्र पहुँचने तक वह तेरा पीछा छोड़ देगा। जब हम पवित्र आत्मा का सहारा ले लेते हैं तो उसके पास प्रेत नहीं आता।

सहजो बाई भी यही कह रही है कभी प्रेत बने कभी राक्षस बने कभी देवता बने तब भी मौत का सामना करना पड़ाः

माया मोहे सब देवी देवा, भरमे सुर नर देवी देवा।।

सारे उस जाल में फँसे हुए हैं, सब भ्रम में अपना जीवन व्यतीत कर जाते हैं। असली काम 'सुरत-शब्द' की कमाई नहीं की।

मैं भक्त त्रिलोचन की बानी के बारे में बता रहा था एक बार नहीं कई बार प्रेत की योनि मिलती है।

अंत समय जो माया सिमरे ऐसी चिंता में जे मरे सर्प जोनि बल बल उतरे।।

अंत समय में जिसे माया की वासना है उसे बार-बार सर्प की योनि में जाना पड़ता है।

अंत समय जो लड़के सिमरे ऐसी चिंता में जे मरे सूकर जोनि बल बल उतरे।।

अंत समय में जो बच्चों की चिंता करता है उसकी प्यास बुझाने के लिए उसे बार-बार सूरनी की योनि दी जाती है। सूरनी के बहुत सारे बच्चे होते हैं जिसमें वह अच्छी तरह भुगतान कर ले।

अंत समय जो स्त्री सिमरे ऐसी चिंता में जे मरे वेश्या जोनि बल बल उतरे।।

अंत समय में जो मर्द स्त्री को याद करता है या स्त्री मर्द को याद करती है उसे वेश्या की योनि मिलती है। उसे ऐसा जामा दिया जाता है जिसमें वह अपनी हवश पूरी कर ले, जिसमें अनेकों बिमारियां लग जाती हैं। ऐसा नहीं कि हवश पूरी करने में सुख मिलता है बल्कि शान्ति भंग हो जाती है। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैंः

कामवंत कामी जो नारी पर गृह जोए न चूके।
दिन परत करे करे पछतापे लोभ सोग में सूके।।

कामी औरत बुराई करती भी है पछताती भी है। कामी आदमी बुराई कर लेता है फिर पछताता हैं लेकिन पछताने से क्या होता है?

अंत समय नारायण सिमरे भक्त त्रिलोचन ते नर मुक्ता पितांबर ताँके हृदय बसे।।

अंत समय में जिसकी आशा उस मालिक गुरु में है उसके अंदर परमात्मा प्रकट हो जाता है। जिस गुरु ने नाम दिया है वह अंधेरे में लेकर नहीं जाता अगर आपका ख्याल उस तरफ है तो

बेसतसंगी भी गवाही देते हैं कि हमारे बुजुर्ग की संभाल हुई है। जिसको नाम दिया है गुरु उसकी संभाल क्यों नहीं करेगा?

सवाल यह है कि हम गुरु को कितना याद करते हैं? सेवक की भी कुछ जिम्मेवारी है अगर मरते समय हम रोएं-चिल्लाएं, मालिक की तरफ, सिमरन की तरफ ध्यान नहीं तो गुरु बेचारा क्या करे? फिर भी गुरु दयावान है वह ऊपर के मंडलों में जाकर संभाल कर लेता है काल के हवाले नहीं होने देता।

मैं बताया करता हूँ कि सन्त गरीब नवाज होते हैं। वे फिर भी दया करते हैं उन्हें लाज होती है कि मेरा जीव होकर काल के बस न पड़े लेकिन हिसाब देना पड़ता है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''हम जो कर्म करते हैं उसका हिसाब-किताब गुरु दे या शिष्य दे लेकिन काल माफ नहीं करता।''

शिष्य बेचारा क्या हिसाब दे देगा? अगर हिसाब देने वाला ही हो तो वह कमाई क्यों न करे, अपने आपको पवित्र क्यों न बना ले? ऐसे शिष्य गुरु पर बोझ होते हैं लेकिन सारे शिष्य ऐसे नहीं होते। आपकी संगत में ऐसे बहुत से शिष्य मिल जाएंगे जो गुरु के ऊपर अपना सब कुछ कुर्बान किए बैठे हैं। जिन्होंने गुरु को अंदर प्रकट किया होता है वे हमेशा गुरु को साथ-साथ लिए फिरते हैं।

देह छुटै मन में रहै, सहजो जैसी आस।
देह जन्म जैसी मिलै, जैसे ही घरबास।।

सहजो बाई कहती हैं, ''मरते समय जैसी आशा होती है आगे वैसी ही योनि, वैसा ही घर मिलता है।''

जाकी रहै आश मंदिर में, होकरि घूस वसै सो घर में।।
रहै वासना द्रव्य मँझारा। जनमैं नाग होइ फुनकारा।।

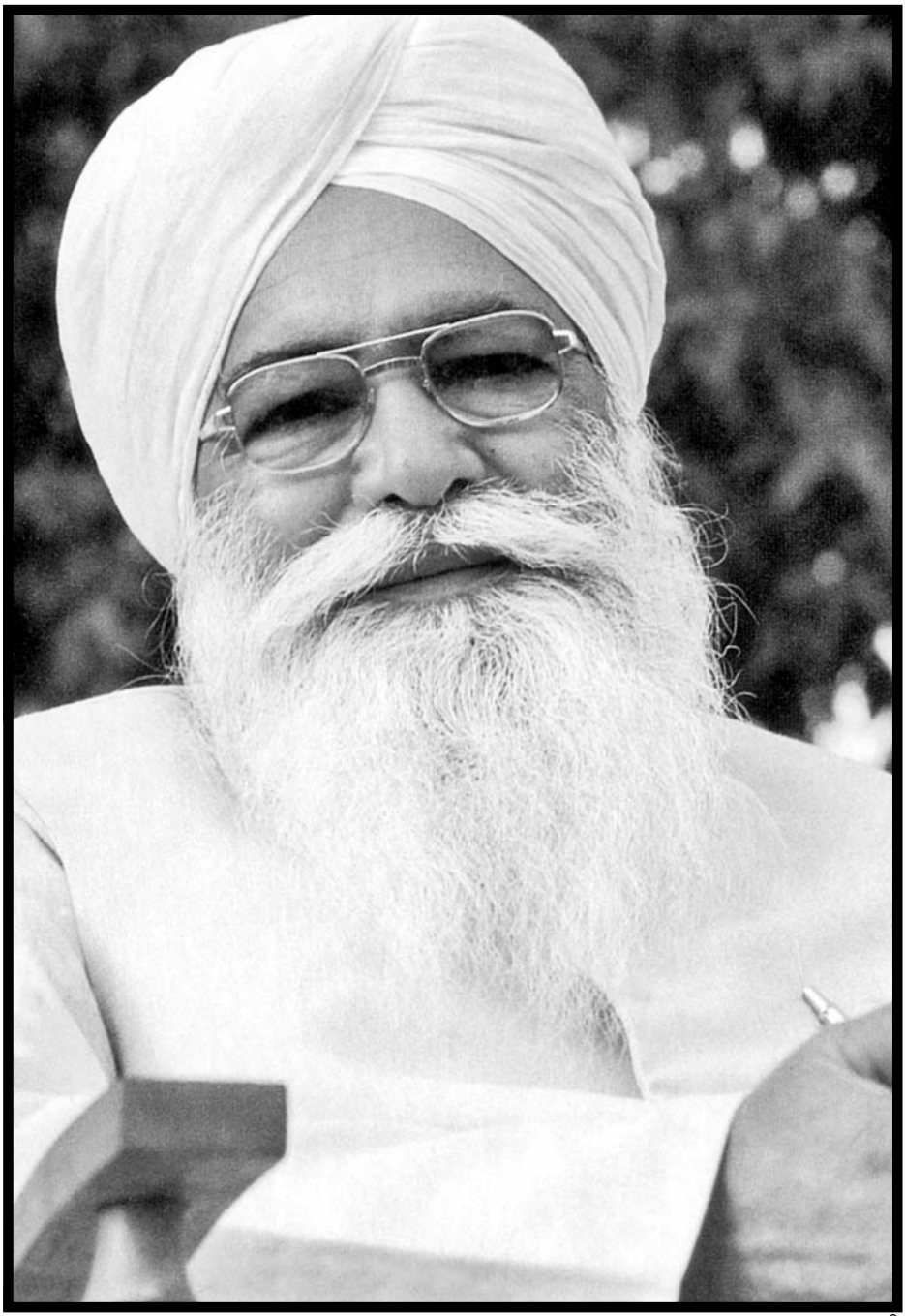

रहै बासना तिरिया माहीं। कोढी श्वान धरै तनु आहीं।
रहे वासना तियको बरकी। कुतिया होइ चूहरे घरकी।।
जाकी रहैं पुत्र में आसा। सूवर जन्म नीच घर वासा।।
जाका मन रहै राजदुआरा। हस्ती हो शिरमें ले छारा।।
रहै वासना नीर पियासी। मीन देह धर जल की बासी।।
रहै वासना बाहन संगा। होय जन्म ले वाहन अंगा।।
जहाँ वासना जितही जाई। यह मत वेद पुराणन गाई।।
चरणदास गुरु मोहि बताई। तजो वासना सहजो बाई।।

जो भक्त त्रिलोचन ने बताया था वही सहजो बाई ने बताया है कि जहाँ आशा है वहीं जाना पड़ता है। सहजो बाई कहती हैं, ''मैं ही आपको यह बात नहीं कह रही आप किसी भी वेद-पुराण को पढ़कर देख लें कि जीव जो कर्म करता है इसे वह कर्म भोगने के लिए आना पड़ता है और इसे वैसी ही योनि मिलती है।''

आप कहती हैं कि मेरे ऊँचे भाग्य थे मुझे गुरुदेव चरनदास जी मिल गए। मेरे गुरुदेव ने मुझे बताया कि बेटी जगत की आशा छोड़ दे नाम की आशा रख, सतगुरु में दिल रख जिसने तेरी मदद करनी है। सहजो बाई हमें अच्छी तरह समझा रही हैं। गौर से सुनें:

सहजो लोक परलोक की, नहीं बासना ताहि।
सो वह ब्रह्म स्वरूप है सागर लहर समाहि।।

आप कहती हैं, ''जो शब्द के साथ जुड़ गया शब्द रूप हो गया वह रहता तो दुनिया में है लेकिन जीते जी दुनिया के पदार्थों से अपना मोह हटा लेता है।''

जैसे जल में कमल अनालम मुरगाई नी छानी।

मुरगाबी पानी में रहती है लेकिन खुष्क परों से उड़ जाती है। ऐसा जीव जीते जी ब्रह्म स्वरूप है उसे मौत का क्या डर, वह कैसे कह सकता है कि मरने के बाद मुझे धर्मराज के पास जाना पड़ेगा?

मैं सुंदरदास की कहानी बताया करता हूँ कि वह पुराने ख्यालों का इंसान था। किसी ने सुंदरदास से कहा कि तू साईकिल चलाना सीख ले धर्मराज के पास जाकर क्या बताएगा? सुंदरदास ने कहा, ''मेरा धर्मराज के पास क्या काम? मेरे गुरु बाबा सावन सिंह जी हैं मैंने उनके पास जाना है, वह मुझे लेने आएंगे।''

सुंदरदास ने छह महीने पहले ही बता दिया था। उस दिन सुबह का समय था बहुत सारे प्रेमी सतसंगी मौजूद थे। सुंदरदास जितना अभ्यास करना बहुत ही मुश्किल है। जो जीते जी हर तरफ से आशा हटा लेते हैं वे ब्रह्म स्वरूप हैं। उन्हें पता है मैंने गुरु के पास जाना है उनमें से गुरु की वाशना आती है।

जाकी गुरु मे वासना, सो पावै भगवान।
सहजो चौथे पद बसै, गावत वेद पुरान।।

सहजो बाई कहती है, ''आप किसी भी महात्मा के लिखे हुए ग्रंथ पढ़कर देख लें जिसकी गुरु में आस है उसे चौथा पद निर्वाण पद मिलता है, भगवान मिलता है। सारे वेद-पुराण यही गा रहे हैं।''

परमेश्वर की वासना, अंत समै मनमाहिं।
तनु छूटै हरि को मिलै, उपजै विनशै नाहिं।।

सतगुरु हमें परमात्मा के साथ जोड़ देता है। जिसकी शब्द-नाम में आशा है वह परमात्मा में मिलकर अमर हो जाता है। परमात्मा सत्य है वह भी सत्य हो जाता है। गुरु गोंबिंद सिंह जी से पूछा गया कि दुनिया में किसका नाम रहता है? आप कहते हैं:

राम रहयो साधु रहयो, रहयो गुरु गोबिंद।
कहो नानक इस जगत में जिन जपयो गुरु मंत्र।।

गुरु नानकदेव जी ने नाम को महामंत्र कहा है। गुरु किताबों में से पढ़कर या सुना-सुनाया नाम नहीं देते यह उनकी जिंदगी की कमाई होती है। प्यारेयो! आप सन्त की कमाई देखें नाम के पीछे उनका तप-त्याग काम करता है। सन्त जब नाम देते हैं तो बहुत से प्रेमी इन पाँच पवित्र नामों के अर्थ लगाना शुरू कर देते हैं फिर पूछते हैं कि इनका क्या महातम है?

मैं सतसंग में बताया करता हूँ कि अक्षरी रूप में इनका कोई महातम नहीं। ये पाँच अक्षर उन धनियों के नाम हैं जिन्हें हमारी आत्मा ने अभ्यास के समय पार करना है। हम जैसे-जैसे जिस मंडल को पार करते हैं खुद ही जाकर देख लेते हैं। हम जिस मुल्क से कोई सामान लेकर जाते हैं तो हमें उसका टैक्स देना पड़ता है।

सन्त बहुत दयावान होते हैं। जब हम अभ्यास करते हैं, भक्ति करते हैं सन्त साथ की साथ इनका टैक्स चुकवा देते हैं लेकिन एक से दूसरा मंडल हमारी आत्मा ने शब्द के ऊपर सवार होकर ही पार करने हैं। सिमरन हमें आँखों तक, गुरु स्वरूप तक ही लेकर जाता है। परमात्मा समुंद्र है, सतगुरु उस समुंद्र की लहर है, आत्मा बूँद है, बूँद भी पानी है, लहर भी पानी है, समुंद्र भी पानी है फर्क विछोड़े का ही होता है।

साधुसंग की वासना, जिहि घट पूरी जोय।
मनुष जन्म सतसंग मिलि, भक्ती प्रापति होय।।

भक्ति का पदार्थ अमोलक है यह कीमत चुकाने से नहीं मिलता। भक्ति काम, क्रोध, लोभ, मोह, अंहकार की नाशक है। सच्चा सुख

सच्ची इज्जत भक्ति से ही प्राप्त होता है। जब तक हम गुरुमुखो की सोहबत-संगत में नहीं जाते इस धन को अपने आप प्राप्त नहीं कर सकते। सन्त-महात्मा परमात्मा नहीं होते लेकिन वे परमात्मा से कम भी नहीं होते। महात्माओं ने परमात्मा को अपने ऊपर मेहरबान कर लिया होता है उसे अपने प्यार की जंजीरों में जकड़ लिया होता है। भक्त नामदेव जी कहते हैंः

मेरी बद्धी भक्त छुड़ावे।

परमात्मा कहता है अगर भक्त मुझे बांध भी दे तो मैं पूछ नहीं सकता कि मुझे किस गुनाह में बांधा है? पल्टू साहब कहते हैंः

ढले पसीना सन्त ढले मेरा लहू है।

कबीर साहब कहते हैंः

मन मेरा पंछी भया, उड़कर चढ़या आकाश।
स्वर्ग लोक खाली पया, साहेब सन्ता पास।।

मैं लोगों से सुनता था कि परमात्मा स्वर्गों में है। मैं उड़कर वहाँ पहुँचा जब निगाह मारी तो मैंने देखा कि परमात्मा का घर सन्तों के पास था। सन्तों ने परमात्मा के रहने के लिए अपना दिल अपना घर पवित्र बनाया होता है।

हम आमतौर पर घरों में कह देते हैं कि तू कल सतसंग सुनकर आया है, रोज ही सतसंग में चला जाता है। उसके कर्मों में सतसंग लिखा है, जिनके अंदर सतसंग की चाहना है उन्हें ही भक्ति का पदार्थ मिलता है।

सहजो हरि के नाम की, रहै वासना पीर।
चौराशी संकट कटै, यम की छूटै पीर।।

सहजो बाई कहती हैं, ''जिसके मन में हरि के नाम की वासना है वह चौरासी में नहीं जाएगा उसे यम की पीड़ा नहीं सहनी पड़ेगी।'' गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैंः

हम संतन की रैण प्यारे, हम संतन की शरणा।
सन्त हमारी ओट सताणी, सन्त हमारा गहना।
सन्तन स्यों मेरी लेवा देवी, सन्तन स्यों व्यवहारा।
सन्तन मौको पूंजी सौंपी तो उतरया मन का धोखा।।
धर्मराय अब क्या करेगा जे फाटयो सगलो लेखा।
महाआनन्द भया सुख पाया सन्तन के प्रसादे।
कहो नानक हर स्यों मन मानया रंग रते बिसमादे।।

सन्त हमारे कर्मों का कागज ही फाड़ देते हैं, जब हमारी बही ही खत्म हो गई तो हिसाब किसने देना है?

चौराशी काया पहर, दुख सहै नाना त्रास।
भली भई अब के कुशल, चरणदास की आश।।

बेशक हम कह लेते हैं कि हम गुरुमत पर चलते हैं लेकिन जब नाम मिल जाता है सन्तों की शरण में आ जाते हैं फिर अंदर खुद ही फैसला कर लेते हैं कि मैं अब गुरुमत पर चल रहा हूँ या पहले गुरुमत पर चल रहा था?

सहजो बाई कहती हैं, ''पता नहीं अनेक जन्मों में कितने कष्ट सहे। परमात्मा ने मेहर की मुझे गुरु मिला, गुरु ने मुझे शब्द के साथ जोड़ दिया। आप अपने गुरु की बड़ाई करती हैं कि मुझे बख्शने वाला मेरा गुरु ही है।''

गुरु गोबिंद दोनो खड़े किसके लागूं पाये।
बलिहारी गुरु आपणे जिन गोबिंद दिया मिलाये।।

सहजो बाई एक जगह यह भी कहती हैंः

राम तजूँ पर गुरु न विसारुँ, गुरु को हरि सम न निहारुँ।
हरि ने जन्म दिया जग माही, गुरु ने आवागमन छुड़ाई।
हरि ने पाँच चोर दिए साथा, गुरु ने लई छुड़ाए अनाथा।।

मैं राम को तज दूँगी लेकिन गुरु को नहीं बिसारुंगी। गुरु को हरि के बराबर नहीं खड़ा कर सकती क्योंकि हरि ने जन्म दिया और गुरु ने आवागमन छुड़ा दिया। हरि ने काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार पाँच चोर दिए। इस देह को कभी काम, कभी क्रोध, कभी लोभ, कभी मोह तो कभी अंहकार लूटते हैं। जिसके घर में एक चोर घुस जाए वह पूरे घर को बर्बाद कर देता है लेकिन जिसके घर में पाँच चोर घुसे हों! हमें पता नहीं कि हम इन्हें भोगते हैं या ये भोग हमें भोग जाते हैं और हमारे शरीर को सितार की तरह थोथा कर देते हैं फिर बुढ़ापे में पछताते हैं।

चौराशी के त्रास सुनि, यम किंकर की मार।
सहजो आए गुरु शरण, सुमिरे सिरजनहार।।

जो आदमी दुखों से डरता है, जिसे मौत का भय है जिसे यह पता है कि मैंने एक दिन इस **खानाबदोशों की बस्ती** को छोड़ जाना है वही आदमी सन्तों के चरणों में आकर बैठता है। सहजो बाई अपना जातिय तजुर्बा बताती हैं कि जब मैंने दुनिया को त्रास-त्रास करते हुए देखा तो मैं गुरु की शरण में आई, गुरु ने मुझ पर मेहर की मुझे उभार दिया।

मुझे बाबा बिशनदास जी से 'दो-शब्द' का भेद मिला था आप अच्छे पढ़े-लिखे सज्जन थे। आपके गुरुदेव पंजाबी में भी दस्तखत नहीं करना जानते थे। बाबा बिशनदास जी को पता था अगर मैं इनसे कोई पढ़ाई-लिखाई का सवाल पूछूंगा तो मैं कोई फायदा नहीं उठा सकता। बाबा बिशनदास जी ने अपने गुरुदेव के पास जाकर इतना ही कहा, ''महाराज जी! मुझे नर्क में से निकाल दें।'' बाबा बिशनदास जी मुझे बताया करते थे कि मेरे गुरु के पास जो कुछ था उन्होंने मुझे दे दिया।

बुल्लेशाह आलम-फाजल बहुत पढ़ा-लिखा सज्जन था। शाह ईनायत खेती का काम करते थे। जो लोग चावल और प्याज की खेती करते हैं उन्हें पता है कि जब पौधे एक तरफ से बढ़ जाते हैं तो उन्हें उखाड़कर दूसरी तरफ लगा देते है। बुल्लेशाह ने शाह इनायत के पास जाकर कहा, ''महाराज जी! मैं पढ़कर-लिखकर, मस्जिद का मौलवी बनकर थक गया हूँ मेरा पिता भी मस्जिद का मौलवी है। हमारी पिता-पुरखी चली आ रही है। अब आप मुझे रब को पाने का रास्ता बताएं?'' शाह ईनायत ने कहाः

बुल्लेया रब दा की पावणां, एदरो पुटणा ते ओदर लावणा।

दुनिया की तरफ से ख्याल को हटाकर परमात्मा की तरफ लगाना है, गुरु जो रास्ता बताता है उस पर चलना है।

भाई बेला गुरु गोबिंद सिंह जी के चरणों में गया। गुरु गोबिंद सिंह जी ने पूछा, ''क्यों भई! कुछ पढ़ा-लिखा है?'' बेला ने कहा, ''नहीं जी मैं पढ़ा-लिखा तो नहीं हूँ मैं जमींदार हूँ। घोड़ो की अच्छी सेवा कर लेता हूँ।'' गुरु साहब ने घोड़े भी रखे हुए थे और उन्हें घोड़े संभालने वाले की भी जरूरत थी, उसकी वहाँ ड्यूटी लगा दी। बेले ने बहुत दिल लगाकर घोड़ो की सेवा की।

गुरु साहब ने एक दिन खुश होकर कहा बेलया! तू पढ़ा भी कर और रोज मुझसे एक तुक ले लिया कर। उस समय गुरु गोबिंद सिंह जी ने जुल्म की खातिर तलवार उठाई हुई थी। इतिहास बताता है कि वह ऐसा समय था जब एक महात्मा को इतना कुछ करना पड़ा। गुरु साहब जंग के लिए जा रहे थे। बेले ने सोचा! गुरु साहब जा रहे हैं पता नहीं कितना समय लगे मेरी तुक रह जाएगी। बेले ने गुरु साहब से कहा, ''मेरी तुक बता दें।'' गुरु साहब ने कहाः

वाह भाई बेला न पछाणे वक्त न पछाणे वेला।

बेला सारा दिन घोड़ो की सेवा करता रहा और तुक भी रटता रहा। वहाँ पढ़े-लिखे ग्रंथी भी थे उन्होंने कहा कि महाराज जी तो इससे पीछा छुड़ाकर गए थे लेकिन यह उसी को हदीश समझ बैठा है। जब गुरु महाराज वापिस आए तो उन ग्रंथियों ने कहा कि आप बेले को कोई तुक बताकर गए थे? यह तो सुबह से यही रटे जा रहा है, ''वाह भाई बेला! न पछाणें वक्त न पछाणें वेला।'' गुरु साहब ने हँसकर बेले की तरफ आँखें मिलाकर कहा, ''हाँ भई! जिसने वेला वक्त नहीं पहचाना उसी ने परमात्मा को पाया है।''

महात्मा हमें दिन-रात चेतावनी देते रहे हैं अब हमारा भी फर्ज बनता है कि भजन-सिमरन करके अपने जीवन को पवित्र बनाएं।

***

11.01.1993

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले

भजन–अभ्यास

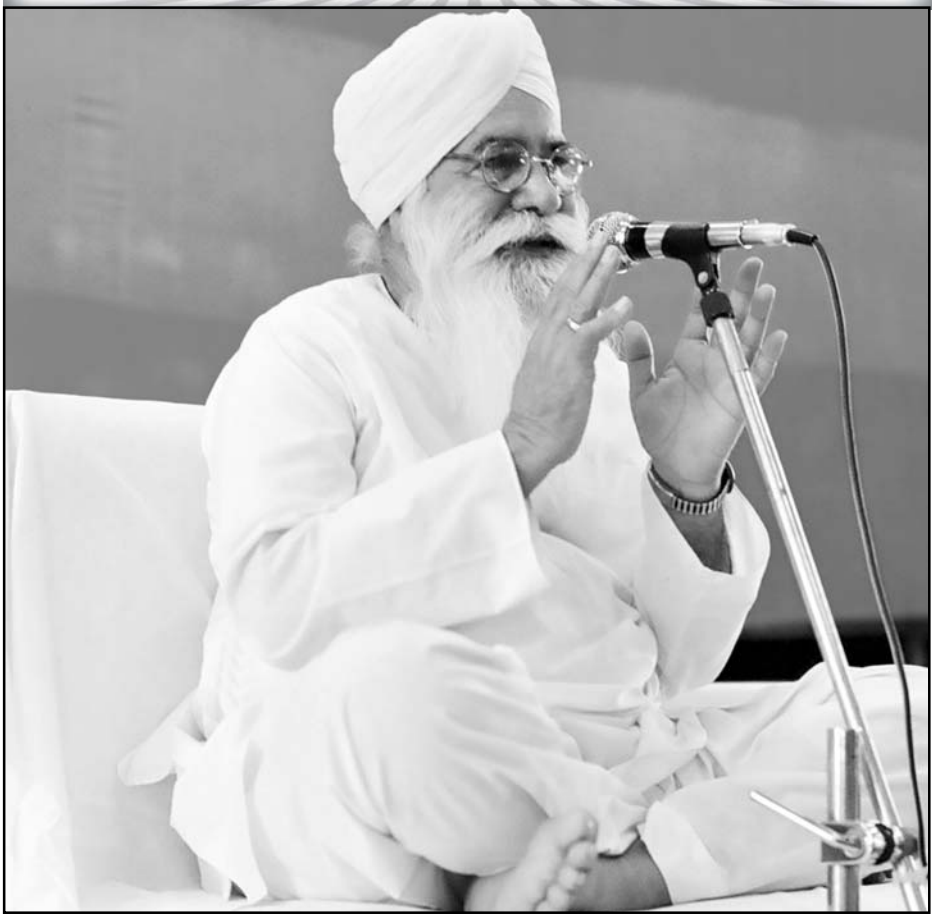

हाँ भई! रोज की तरह मन को शान्त करें, शान्त मन ही अभ्यास कर सकता है। अभ्यास को बोझ न समझें प्रेम-प्यार से करें। जब हम अपने किसी यार-दोस्त का काम लग्न से करते हैं तो वह खुश होता है, लग्न से किया गया काम बोझ नहीं लगता।

समय बदलता रहता है और बदलता ही रहेगा। नाम नहीं बदलता, नाम समय को बदलता है, नाम थिर है अटल है। अगर

हम सन्तों की बताई हुई युक्ति के मुताबिक उनकी रहमत से 'शब्द-नाम' के साथ जुड़ जाते हैं तो हम भी थिर हो जाते हैं नहीं तो हम इस अदला-बदली के संसार में सदा ही आते-जाते रहते हैं। अगर थिर होना है तो हमें अंदर नाम के साथ जुड़ना चाहिए।

सन्त हमें जो पाँच पवित्र नाम बताते हैं हम आहिस्ता-आहिस्ता इनका सिमरन करें तो हमें स्वाभाविक ही एकाग्रता प्राप्त हो जाती है। ये उन विशाल मालिकों के नाम हैं जिन्हें अभ्यास के दौरान हमारी आत्मा ने पार करके आगे जाना है। सिमरन का काम आँखों के पीछे आकर सूरज मंडल, तारा मंडल और चन्द्रमा मंडल को पार करके सतगुरु के स्वरूप तक पहुँचना है। जब आत्मा वहाँ पहुँच जाती है तो यह सच्चे मायनों में सतगुरु की शिष्या बन जाती है। आगे सतगुरु की ड्यूटी है कि वह एक मंडल से दूसरे मंडल को किस तरह पार करवाता है। हमने श्रद्धा के साथ नाम जपना है।

महाराज सावन सिंह जी एक प्यार भरी कहानी सुनाया करते थे कि किसी राजा का कोई लड़का नहीं था। उसने कई मंजिला महल बनवाया। पहली मंजिल पर कोड़ियां बिखेर दी, दूसरी मंजिल पर रूपये-पैसे बिखेर दिए और आखिरी मंजिल पर वह खुद बैठ गया। सबको बता दिया गया कि इस महल में से जिस आदमी को जो पसंद आए वह उठाकर ले जा सकता है लेकिन जो एक बार आए वह दोबारा न आए। जिस मंजिल से सामान उठाना है सिर्फ उसी मंजिल से उठाए दूसरी मंजिल पर न जाए। जो कमजोर दिल आदमी थे उन्होंने बहुत जल्दबाजी की कि बहुत अच्छा वक्त मिला है वे कौड़ियों की गठरी बाँधकर लौट आए। जो थोड़ी बहुत सूझ-बूझ रखते थे वे इससे ऊपर की मंजिल पर गए उन्होंने वहाँ रूपये-पैसे देखे वे उन रूपये-पैसों की गठरी बाँधकर लौट आए।

जो मजबूत दिल आदमी था जिसका दिल फौलाद जैसा था उसने सोचा कि आखिर ऊपर की मंजिल पर देखें क्या है? वह जब ऊपर की मंजिल पर गया तो उसने देखा कि वहाँ खुद बादशाह बैठा था, बादशाह के सिर के ऊपर सोने का ताज था। बादशाह ने अपने सिर से ताज उतारकर उस मजबूत आदमी के सिर पर रख दिया और उस आदमी को सदा के लिए बादशाह बना दिया।

यह हालत हमारे ऊपर सही लागू होती है। कोई सूक्ष्म देश में जाकर डेरे लगा लेता है। कोई मान-बड़ाई में घूमता फिरता है। कोई स्वर्ग-बैकुंठ में जाकर डेरे लगा लेता है। कोई एक ही मालिक का प्यारा मजबूत दिल वाला देखता है कि आखिर ऊपर जाकर देखें कि ऊपर क्या है? वह किसी भी जगह नहीं अटकता।

मैं बाबा बिशनदास जी के बारे में बताया करता हूँ कि उनका दूसरी मंजिल तक का प्रैक्टिकल था। उनका जीवन बहुत अच्छा था लेकिन उन्हें यह भी ज्ञान था कि इससे ऊपर भी कुछ है इसलिए आपने मुझे उस जगह रूकने नहीं दिया और कहा कि तेरा रास्ता इससे भी आगे है। सन्त ईंट-पत्थरों से बाँधने के लिए नहीं आते।

मैं बताया करता हूँ कि मेरा महाराज सावन सिंह जी के एक नामलेवा के साथ प्यार था, उसके पास पाँच-शब्द का भेद था। मेरे पास दो-शब्द तक का प्रैक्टिकल था। अगर हम नाम लेकर कमाई न करें तो नाम का क्या अहंकार हो सकता है? किसी के घर में करोड़ों रूपये दबे हैं अगर वह उन रूपयों को न निकाले और बाहर कौड़ियां माँगता फिरे उसे उस धन से क्या फायदा हो सकता है? सतगुरु ने पाँच शब्द का भेद दिया है उनका मकसद यह नहीं था कि आप बिल्कुल अंदर न जाएं कमाई न करें। सतगुरु तो चाहते हैं कि हमारे जीवनकाल में ही ज्यादा से ज्यादा प्रेमी अंदर शब्द-

नाम की धार प्राप्त कर लें, अंदर पर्दा खोल लें; उन्हें उतनी ही खुशी होती है। आप देख लें! जिस स्कूल टीचर के बच्चे अच्छा पढ़ने वाले हों तो टीचर को खुशी होती है।

मैं जब नशहरा में वायरलेस ऑपरेटर का इम्तिहान देने लगा, तब अंग्रेजों का जमाना था। मेरे अच्छे नम्बर थे, मेरे उस्ताद घूमकर देख रहे थे कि इसको क्या रिमार्क दें। जब मेरा नाम बोला गया तब मेरे उस्ताद ने मेरी बगलों में हाथ डालकर मुझे कुर्सी के ऊपर खड़ा कर दिया। उस समय मेरे उस्ताद को मुझसे ज्यादा खुशी थी। एक दुनियावी उस्ताद को इतनी खुशी हो सकती है तो जब हमारी आत्मा यहाँ से मालिक के पास जाएगी उस समय हमारे पूर्ण सतगुरु को कितनी खुशी होगी, वह खुशी ब्यान से बाहर है।

मजबूत दिल आदमी सचखंड से पहले स्वर्ग, बैकुंठ में नहीं अटकता। वह चाहता है कि ऊपर चलकर देखें क्या है? आखिर जब वह परमात्मा गुरु के पास जाता है तब गुरु परमात्मा उसे रूहानी नाम का ताज पहना देता है, वह दुनिया में रहता हुआ मुक्त है।

गुरुमुख आए जाए निसंग।

गुरुनानक साहब कहते हैं, ''ऐसे प्रेमी की हालत तेल की धार जैसी हो जाती है जिस तरह तेल की धार नहीं टूटती उसी तरह उसकी गति हो जाती है।''

हमने प्यार और श्रद्धा से सिमरन करना है, मन को एकाग्र करना है। मन को एकाग्र करने का सबसे जबरदस्त साधन पाँच पवित्र नाम हैं। आप सिमरन करें जब यहाँ से आवाज दी जाए तभी उठना है। बैठें।

***

30.08.1985

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

लालच

इतिहास में एक कथा आती है कि भगवान और माया का संवाद हुआ। माया ने कहा, ''मेरे भक्त तुझे छोड़ सकते हैं तुझे बाहर निकाल सकते हैं।'' भगवान ने कहा, ''मेरे भक्त तेरी तरफ देखते भी नहीं।'' उन्होंने कहा हम इस चीज का निर्णय कर लेते हैं भगवान ने एक साधु का रूप धारण कर लिया और माया ने एक औरत का रूप धारण कर लिया। पहले भगवान एक साहूकार के घर में गए और वहाँ जाकर उन्होंने कहा, ''मैंने भजन-अभ्यास करना है अगर आप मुझे अपने घर में जगह दें।''

उस घर के लोगों ने कहा कि हम महात्मा की सेवा करके खुश होते हैं, हम तो यह घर महात्मा के लिए ही समझते हैं। आप आएं ऊपर चौबारे में रहें हम आपकी हर तरह की सेवा करेंगे। महात्मा को वहाँ रहते हुए कुछ दिन हो गए घर के लोग महात्मा की खूब सेवा करते रहे, उनके ऊपर माया का कोई असर नहीं था।

आखिर कुछ दिनों बाद माया भी औरत का रूप धारण करके उनके घर आ गई। उस औरत ने गले में माला डाल रखी थी और साधु का रूप धारण किया हुआ था। माया ने कहा कि मैंने खाना तैयार करना है। घर के लोगों ने कहा हाँ जी! आप खाना तैयार करें, उन्होंने बर्तन वगैरहा दिए। माया ने वह बर्तन सोने के बना दिए। यह तो एक भ्रम था।

घर के लोगों ने देखा कि यह महात्मा औरत इतनी शक्तिशाली है कि इसने बर्तन भी सोने के बना लिए हैं लेकिन जो महात्मा अपने चौबारे में बैठा है उसने तो ऐसा कुछ नहीं किया। जब वह

औरत खाना बनाकर वहाँ से जाने लगी तो उसने बर्तन वहीं छोड़ दिए। उस समय तक उस घर के लोगों पर माया का कोई असर नहीं था तो उन्होंने कहा महात्मा जी आप इन बर्तनों को ले जाएं हमने इन बर्तनों का क्या करना है? उस औरत ने कहा, ''मेरा यह कायदा है कि मैं जिन बर्तनों में खाना बनाती हूँ वे बर्तन कभी अपने साथ लेकर नहीं जाती, आगे मालिक अपने आप ही दे देता है।''

घर के लोगों के दिल में ख्याल आया अगर यह महात्मा दो-चार दिन हमारे घर में रह जाए तो हम बहुत धनी हो सकते हैं। उन्होंने कहा कि महात्मा जी! आप थकी हुई हैं आज का दिन यहाँ आराम करें फिर चले जाना। आपको पता है कि लालची आदमी कैसे खुशामदें करता है। आखिर उसने वहाँ रहना ही था। शाम को जब वह जाने लगी तो उन्होंने फिर रोका तो महात्मा औरत ने कहा कि मैं एक शर्त पर यहाँ रह सकती हूँ अगर आप मुझे वह चौबारा दे दें ताकि मैं एकांत में बैठकर अपना अभ्यास कर सकूं।

घर के लोगों ने चौबारे में जाकर महात्मा से कहा, ''बाबा जी! आपको यहाँ बैठे हुए कई दिन हो गए हैं, अब कुंभ का मेला भी है आप वहाँ चले जाएं फिर कभी यहाँ आकर एक महीना लगा लेना। वह महात्मा औरत के जामें में है, औरत की हठ है। वह कहती है कि मैंने यही जगह लेनी है।''

महात्मा नीचे आ गए तो माया ऊपर चली गई। सुबह माया ने कहा, ''मैं जा रही हूँ।'' घर के लोगों ने कहा कि आप बताएं तो सही आपको क्या दिक्कत है? माया ने कहा, ''आपके घर में जो बैठा है यह साधु नहीं है, यह तो मुझे आँखें फाड़-फाड़कर देख रहा है। आप इसे घर से निकालें तभी मैं यहाँ रह सकती हूँ।''

माया के **लालच** में उन बेचारों को सब कुछ ही करना पड़ा। उन्होंने कहा महात्मा जी! अब आप चले जाएं फिर कभी आ जाना। महात्मा चुप करके चले गए। महात्मा के जाने की देर है वहाँ देखते हैं न कोई महात्मा है न कोई सोने का बर्तन है। वे बहुत पछताए कि महात्मा को भी घर से निकाला माया भी नहीं रही।

आखिर जब भगवान और माया बाहर आए तो माया ने कहा देखा! तू वहाँ अपना आसन लगाए बैठा था लेकिन जब मैंने वहाँ आकर अपना चमत्कार दिखाया तो उस घर के लोगों ने तुझे अपने घर से निकाल दिया। महात्मा ने कहा, ''ये दिखावे के भक्त थे। तू काशी में कबीर साहब के पास जा वहाँ जाकर तुझे पता लगेगा।'' माया ने कबीर साहब के पास जाकर कहा, ''तू पहले मेरी ताणी बुन दे।''

कबीर साहब ने कहा मेरा यह उसूल है कि मैं बारी से काम करता हूँ पैसे-टके का सवाल नहीं मैं सबसे एक जैसे ही पैसे लेता हूँ। माया ने कहा कि तू मुझसे ज्यादा पैसे ले लेना। कबीर साहब ने सोचा यह तो कोई छल है और उससे कहा कोई बात नहीं तू यहाँ बैठ। कबीर साहब अंदर जाकर छुरा ले आए और उस छुरे से माया का नाक और कान काट दिए। कबीर साहब कहते हैं:

नाको काटी कानो काटी काट कूटकर डारी।
कहे कबीर संतन की बैरन तीन लोक की प्यारी।।

माया भ्रम को कहते हैं। इंसान भ्रम में पड़कर कभी कहता है कि सन्त-महात्मा जो कहानियां सुनाते हैं पता नहीं यह सच हैं या झूठ है? कभी-कभी ऐतबार भी कर लेता है कि फलाने का फायदा हुआ था क्योंकि हम जिंदगी में कभी-कभी सतगुरु को आता हुआ भी देखते हैं, आत्मा की संभाल होते हुए भी देखते हैं। कभी-कभी हमारे मन से भ्रम निकल भी जाता है। ***

धन्य अजायब

16 पी.एस. रायसिंहनगर (राजस्थान) आश्रम में सतसंग के कार्यक्रम:

05 से 07 अक्टूबर 2018

02 से 04 नवम्बर 2018

30 नवम्बर और 01 व 02 दिसम्बर 2018

मुम्बई में सतसंग का कार्यक्रम 9 जनवरी से 13 जनवरी 2019 तक है